National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2022; 1(41): 230-231
© 2022 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ.टी.लतामंगेश
सहायक आचार्या, हिंदी विभाग,
राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,
तिरुपती – 517507, आंध्रप्रदेश

Correspondence:
डॉ.टी.लतामंगेश
सहायक आचार्या, हिंदी विभाग,
राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,
तिरुपती – 517507, आंध्रप्रदेश

साहित्य के विकास में मीडिया की भूमिका

डॉ. टी. लतामंगेश

प्रस्तावना

मनुष्य इस सृष्टि का सर्वाधिक संवेदनशील प्राणी है और साहित्य उस की श्रेष्ठतम् अभिव्यक्ति है। मनुष्य साहित्य के माध्यम से अपने मूल्यों सपनों और विश्वासों की सार्थक प्रस्तुति करता है। कई विद्वानों ने साहित्य शब्द को सहित अर्थात हित के साथ माना है। साहित्य मानवीय अभिव्यक्ति का सर्वोत्कृष्ठ रचनात्मक रुप है। ऐसे साहित्य को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाने के कार्य मीडिया ने किया। प्रथम साहित्य मौखिक में था। उसके बाद भोज पत्रों द्वारा लोगों तक पहुँचाया जाता था। प्रिंट मीडिया के अविष्कार ने उसे शिक्षित लोगों के बीच पहुँचाया तो इलेक्ट्रॉनिक मीडिया आज जन-जन तक पहुँचाने का कार्य कर रहा है। अर्थात प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया दोनों ने साहित्य के विकास में अपना महत्वपूर्ण दोनों ने साहित्य के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से अनेकों नये रचनाकारों को अभिव्यक्ति का अवसर मिलता है। भारतेंदु युग में कविवचन सुधा, हरिश्चंद्र चंद्रिका, बाला बोधिनी, हिंदी साहित्य समाज का दर्पण होता है, वहीं मीडिया समाज की आवाज़। जब दोनों का सम्मिलन होता है, तो यह सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक विकास और बौद्धिक विस्तार का सशक्त माध्यम बन जाता है। इस शोध आलेख में यह विश्लेषण किया गया है कि किस प्रकार मीडिया ने साहित्य को नए मंच, नई शैली और नई पहचान दी है।

भारत जैसे विविध भाषाओं और संस्कृतियों वाले देश में साहित्य का एक समृद्ध इतिहास रहा है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक साहित्य समाज के बदलते परिवेश का चित्रण करता आया है। वहीं, मीडिया – चाहे वह प्रिंट हो, इलेक्ट्रॉनिक हो या डिजिटल – आज के युग में सूचना और विचारों का सबसे सशक्त माध्यम बन चुका है। यह आलेख साहित्य और मीडिया के अंतर्संबंधों तथा मीडिया द्वारा साहित्य को मिलने वाले प्रोत्साहन का अध्ययन प्रस्तुत करता है।

पारंपरिक मीडिया और साहित्य -

समाचार पत्रों ने साहित्यिक रचनाओं, कविताओं, लघु कहानियों, और आलोचनात्मक लेखों को स्थान दिया। पत्रिकाएँ जैसे हंस, कादंबिनी, धर्मयुग आदि ने साहित्य को जनमानस तक पहुँचाया। आकाशवाणी के माध्यम से कवि सम्मेलनों और नाटकों का प्रसारण हुआ। दूरदर्शन पर साहित्य आधारित नाटकों और फिल्मों ने साहित्य को जीवंत रूप दिया।

डिजिटल मीडिया और साहित्य का विस्तार -

नए लेखकों को स्वतंत्र रूप से अपनी रचनाएँ प्रकाशित करने का मंच मिला। साहित्यिक समीक्षाएँ, ई-.पुस्तकें, और ऑनलाइन पत्रिकाएँ लोकप्रिय हुईं। फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम जैसे प्लेटफॉर्म्स पर लघुकथाएँ, कविताएँ और विचार अभिव्यक्त किए जाने लगे। #हैशटैग_साहित्य जैसे अभियानों ने साहित्य को युवा वर्ग से जोड़ा। दलित साहित्य, स्त्री साहित्य, आदिवासी साहित्य को मुख्यधारा में लाने में मीडिया की भूमिका रही है। विविध विषयों पर विमर्श, परिचर्चा, वेबिनार और पॉडकास्ट ने साहित्य को जनसंवाद का माध्यम बनाया।

चुनौतियाँ और सीमाएँ -

* गुणवत्ता की गिरावट – हर कोई लेखक बन गया है, पर साहित्यिक मूल्य में कमी आई है।

* ट्रोलिंग, कॉपीराइट उल्लंघन और सतही लेखन की भरमार।

* साहित्य के गूढ़ पक्षों की बजाय तात्कालिकता को अधिक महत्व।

मीडिया ने साहित्य के विकास में एक महत्वपूर्ण और परिवर्तनकारी भूमिका निभाई है। प्रिंट मीडिया, रेडियो, टेलीविजन और अब डिजिटल मीडिया के माध्यम से साहित्य को अधिक व्यापक और विविध पाठक वर्ग तक पहुँचने का अवसर मिला है। जहाँ पहले साहित्य केवल पुस्तकों और पत्रिकाओं तक सीमित था, वहीं आज ऑनलाइन पोर्टल, ब्लॉग, पॉडकास्ट, यूट्यूब चैनल और सोशल मीडिया के माध्यम से यह अधिक सुलभ और लोकप्रिय हो गया है।

निष्कर्ष

मीडिया न केवल साहित्य को प्रचारित और प्रसारित करने का एक प्रभावी माध्यम बना है, बल्कि यह नए लेखकों को मंच प्रदान करता है, विभिन्न भाषाओं और शैलियों को आपस में जोड़ता है, और समकालीन मुद्दों पर साहित्यिक संवाद को प्रोत्साहित करता है। इस प्रकार, मीडिया ने साहित्यिक चेतना को विस्तृत करने में एक सेतु की भूमिका निभाई है, जो साहित्य को जीवंत, प्रासंगिक और जन-सुलभ बनाने में सहायक रही है। साहित्य अब केवल पुस्तकालयों और शालाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि हर व्यक्ति के मोबाइल तक पहुँच गया है। मीडिया ने साहित्य को जन-जन तक पहुँचाकर समाज के हर वर्ग को उसकी अभिव्यक्ति का माध्यम प्रदान किया है। किंतु, इसके साथ-साथ हमें यह भी सुनिश्चित करना होगा कि साहित्य की गुणवत्ता, गंभीरता और संवेदनशीलता भी बनी रहे।

संदर्भ

1. 'भारतीय साहित्य का इतिहास' – रामविलास शर्मा
2. 'मीडिया और समाज' – ओम थानवी
3. विभिन्न साहित्यिक वेबसाइटें(e.g., HindiKunj, Pratilipi, Sahityakunj)
4. समाचार पत्रों में प्रकाशित साहित्यिक स्तंभ